शिवरात्रि अर्थात् अज्ञानता के विनाश का पर्व

विश्व की सभी महान विभूतियों के जन्मोत्सव प्रायः दिन के समय जन्मदिन के रूप में मनाये जाते हैं परन्तु एक परमात्मा शिव की जयंती ही ऐसी है जिसे जन्मदिन न कहकर 9शिवरात्रि" के नाम से पुकारा जाता है, इसका कारण यह है कि निराकार परमात्मा शिव जन्म-मरण से न्यारे अथवा अयोनि हैं। उनका अन्य किसी महापुरुष या देवता की तरह कोई लौकिक या शारीरिक जन्म नहीं होता जो कि उनका जन्म-दिन मनाया जाये। कल्याणकारी विश्व पिता "शिव तो अलौकिक अथवा दिव्य-जन्म लेकर अवतरित होते हैं। उनकी जयंती संज्ञा वाचक नहीं, बल्कि कर्त्तव्यवाचक रूप से ही मनाई जाती है। उनका दिव्य अवतरण विषय-विकारों की कालिमा से लिप्त अज्ञान निद्रा में सोये हुए मनुष्य को जगाने के लिये ही होता है। परमात्मा शिव द्वारा इस 9अज्ञान रूपी रात्रि" का अंत किये जाने के आध्यात्मिक रहस्य से ही शिव जयंती को "शिवरात्रि" कहा जाता है। शिवरात्रिः शिव के दिव्य कर्मों का यादगार अब प्रश्न उठता है कि परमात्मा शिव जो मनुष्य के चैतन्य बीज रूप हैं तथा जन्म-मरण एवं कर्म बंधनों से सदा मुक्त हैं, जो स्वयं सबके माता-पिता हैं, वे कैसे इस सृष्टि पर दिव्य ज्ञान लेकर अवतरित होते हैं ? इसका उत्तर स्वयं भगवान ने दिया है जिसका उल्लेख श्रीमद्भागवत गीता से मिलता है। परमात्मा शिव किसी माता के गर्भ से अपना निजी शरीर धारण करके साधारण मनुष्यों की तरह लौकिक जन्म नहीं लेते हैं। वे तो प्रकृति को अधीन करके अर्थात् 9परमात्मा" परकाया प्रवेश करके दिव्य-जन्म लेते हैं जिसको ही "अवतार" कहा जाता है। परमात्मा शिव का अवतरण कल्पांत अथवा कलियुग के अन्त के घोर अज्ञान-अंधकार अथवा अति धर्मग्लानि के समय एक वृद्ध तन वाले साधारण मानवी तन में होता है। जिसका नाम उस दिव्य प्रवेशता के पश्चात् "प्रजापिता ब्रह्मा" पड़ता है। परमात्मा शिव उस ब्रह्मा के मुख द्वारा ही बहुत काल से प्रायः लुप्त हो चुके ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देते हैं। जिसे वह व्यक्ति (ब्रह्मा) स्वयं भी धारण करके अपने जीवन को कमलपुष्प के समान पवित्र बनाकर नर से श्री नारायण (सतयुगी विश्व महाराजकुमार श्रीकृष्ण) पद की प्राप्ति करता है। इस प्रकार कलियुग के अंत वाले ब्रह्मा ही तो सतयुग की आदि में विष्णु अर्थात् (श्रीकृष्ण) बनते हैं। जो सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग का पूरा चक्कर लगाकर अगले कल्प के अंत में पुनः ब्रह्मा बन जाते हैं। इसलिए 9ब्रह्मा सो विष्णु" 9विष्णु सो ब्रह्मा" की उक्ति प्रसिद्ध है। सतयुग और त्रेता रूपी सुखधाम अथवा स्वर्ग को ब्रह्मा का दिन और द्वापर तथा कलियुग रूपी दुःखधाम अथवा नर्क को 9ब्रह्मा की रात्रि" इसी रहस्य के कारण कहा जाता है। यही ब्रह्मा भगवान शिव के भाग्यशाली शरीर रूपी रथ होने के कारण "भगीरथ" अथवा शिव के "नंदीगण" इत्यादि नामों में भी प्रसिद्ध है। शिवरात्रि और नवरात्रि नवरात्रि में यज्ञ रचकर दुर्गा, अम्बा इत्यादि शक्तियों अथवा 108 कन्याओं का पूजन होता है भारत में 108 शालिग्रामों तथा 108 दानों की रूद्राक्ष माला और वैजयन्ती माला का भी पूजन स्मरण चला आता है। ये 108 शालिग्राम तथा माला के मणके उन पवित्र आत्माओं अथवा शिव शक्तियों के प्रतीक हैं जिन्हें परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के मुख कमल से ईश्वरीय ज्ञान सुनाकर मुख वंशावली चैतन्य ज्ञान गंगायें बनाकर भारत को पतित से पावन बनाया था, ज्ञान सागर, सर्वशक्तिमान परमात्मा शिव से ही ब्रह्माकुमारों ने ज्ञान और योग की शक्ति धारण की थी। माला का युगल दाना (मेरु) ब्रह्मा एवं सरस्वती का द्योतक है और इसका फूल निराकार ज्योति स्वरूप परमात्मा शिव का प्रतीक है। ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग के बल से शिव शक्तियों ने विकारों अर्थात् आसुरी संस्कारों पर विजय प्राप्त की थी इसलिए उन्हें "असुर निकन्दनी" भी कहा जाता है। ज्ञान सागर परमात्मा शिव से अमृत कलश प्राप्त करके अज्ञानता में पड़े मृत प्रायः नर-नारियों को अमर पद दिलाने की ईश्वरीय सेवा करने के कारण ही शिव शक्तियों का पूजन होता है और उन्हें "वंदे मातरम्" अथवा "भारतमाता शक्ति अवतार" कहकर इनकी वंदना की जाती है। परमात्मा शिव तथा प्रजापिता ब्रह्मा के साथ सहयोगी होकर इस पतित सृष्टि का

पावन सृष्टि अम्बा, सरस्वती, दुर्गा, गंगा, यमुना इत्यादि नामों से विख्यात होती हैं। वे चैतन्य ज्ञान गंगायें ही भारत के जन-मन को शिवज्ञान द्वारा पालन करती हैं। महाकालेश्वर शिव ब्रह्मा द्वारा स्थापना पूरी होते ही महादेव शंकर द्वारा कलियुगी सृष्टि का महाविनाश कर सभी मनुष्यात्माओं को शरीर मुक्त करके शिवलोक (परलोक) ले जाते हैं। इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वृत्तान्त का स्मरणोत्सव होने के हेतु शिवरात्रि भारत का सबसे बड़ा त्योहार है। अर्थात् कलियुग को स्वर्ग बनाने का कार्य करने के कारण ही इन शिवशक्तियों के यादगार नवरात्रि का शिवरात्रि से घनिष्ठ सम्बन्ध है। वर्तमान समय परमात्मा शिव, प्रजापिता ब्रह्मा तथा शिव शक्तियों के दिव्य एवं अलौकिक कर्त्तव्य की पुनर्रावृत्ति हो रही है। इसमें सहयोगी बनकर कोई भी मनुष्यात्मा आने वाले सतयुगी दैवी स्वराज्य में अपना ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार भविष्य 21 जन्मों (2,500 वर्ष) के लिए प्राप्त कर सकती है।

शिव का रात्रि से सम्बन्ध –

शिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को अमावस्या के एक दिन पहले मनाई जाती है। फाल्गुन मास वर्ष का अन्तिम मास होता है। और उसकी चौदहवीं रात्रि घोर अंधकार की निशानी है। इस दिन को शिवरात्रि के घोर अज्ञानांधकार रूपी रात्रि के समय मनाने का आध्यात्मिक रहस्य यह है कि परमात्मा शिव ने कल्पान्त के घोर अज्ञानता रूपी रात्रि के समय पुरानी सृष्टि के विनाश से थोड़ा समय पूर्व अवतरित होकर तमोगुण और पापाचार का विनाश करके दुःख और अशान्ति को हरा था। शिवरात्रि सबसे बड़ा पर्व ज्योतिर्बिन्दु परमात्मा शिव कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संधिकाल अथवा संगम के समय ब्रह्मा के तन अथवा भगीरथ अर्थात् भाग्यशाली शरीर रूपी रथ में प्रवेश होकर उसके मुख द्वारा ज्ञान-गंगा बहाते हैं। वास्तव में, यही सच्चा गीता-ज्ञान है। इसे जो शरीरधारी देवता श्री कृष्ण ने नहीं बल्कि गोपेश्वर अव्यक्तमूर्त परमात्मा शिव ने ब्रह्मा द्वारा सुनाया था। ब्रह्मा के द्वारा जो भारत माता और कन्याएं सुधाकर परमात्मा से ज्ञान सुधा (अमृत) का पान करती हैं, वही शिव शक्तियां हैं।

ईश्वरीय सन्देश –

अब परमात्मा शिव आदेश देते हैं कि "मेरे प्रिय भक्तों आप जन्म जन्मान्तर से मेरे यथार्थ स्वरूप को जान मेरी जड़ प्रतिमा की पूजा, जागरण तथा उपवास करके शिवरात्रि मनाते आए हो। अब अपने इस अन्तिम जन्म में महाविनाश से पूर्व ये ज्ञान द्वारा अज्ञान की कुम्भकरणी निद्रा से जागरण कर और साथ उपवास अर्थात् उप + वास अर्थात् यानी परमात्मा के समीप रहो। इस ज्ञान एवं योग की शिवरात्रि को धारण करके महाविनाश तथा ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करो। यही सच्चा महाव्रत अथवा शिवरात्रि है। संक्षेप में शिव का मंत्र अथवा तारक मंत्र यह है कि पवित्र बनो और योगी बनो।

74वीं शिव जयन्ती –

अब वही अति धर्मग्लानी का समय पुनः आ चुका है और पतित पावन परमात्मा शिव साकार ब्रह्मा के तन में प्रवेश कर अपने कल्प पूर्व वाला रुद्र गीता ज्ञान सुना रहे हैं। इस वर्ष शिवरात्रि को हम उनके इस दिव्य अवतरण की 74वीं मना रहे हैं। आप सभी मनुष्य आत्माओं को ईश्वरीय निमन्त्रण है कि शिवरात्रि के आध्यात्मिक रहस्य को यथार्थ रीति से जानकर जन्म-जन्मान्तर के लिए अविनाशी ईश्वरीय सुख-शान्ति को प्राप्त करें।

ओम् शान्ति।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स